



International Journal of Advance Studies and Growth Evaluation

स्वतंत्रता सेनानी श्री हीरालाल जैन कि गोवा मुक्ति सत्याग्रह आंदोलन में भूमिका।

*¹ धर्मेन्द्र कुमार

*¹ शोधार्थी इतिहास, राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, झालावाड़, कोटा विश्वविद्यालय, कोटा, राजस्थान, भारत।

Article Info.

E-ISSN: 2583-6528

Impact Factor (SJIF): 5.231

Available online:

www.alladvancejournal.com

Received: 28/Aug/2023

Accepted: 20/Sep/2023

सारांश:

राजस्थान में अनेक स्वतंत्रता सेनानी और क्रांतिकारी हुए हैं। इनका योगदान देश की स्वतंत्रता, किसान आंदोलन, गोवा सत्याग्रह, एवं जमींदारों व रियासतीय अत्याचारों की मुक्ति आदि के लिए बलिदान देने वाले स्वतंत्रता सेनानियों ने अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। जो आज भी स्मरणीय है। कुछ स्वतंत्रता सेनानियों का इतिहास देखने को मिलता है। लेकिन कुछ स्वतंत्रता सेनानियों का इतिहास के पन्नों में कहीं भी दृष्टिगत नहीं होता है। मेरा उद्देश्य है, कि उन स्वतंत्रता सेनानियों के इतिहास को भी सामने लाया जाए, जिन स्वतंत्रता सेनानियों ने अपना बलिदान दिया। इसमें से एक स्वतंत्रता सेनानी श्री हीरालाल जैन जिन्होंने भारत छोड़ो आंदोलन, राष्ट्रीय स्वतंत्रता आंदोलन, गोवा मुक्ति सत्याग्रह आंदोलन, किसान आंदोलन एवं दलित, मजदूरों के अत्याचारों के प्रति आंदोलन में भाग लिया। इनका बलिदान अतुल्य है, इनका विवरण निम्न प्रकार है।

*Corresponding Author

धर्मेन्द्र कुमार

शोधार्थी इतिहास, राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय,
झालावाड़, कोटा विश्वविद्यालय, कोटा, राजस्थान, भारत।

मुख्य शब्द: स्वतंत्रता, संग्राम, संघर्ष, सत्याग्रहियों, अत्याचार, बलिदान, प्रताड़ित, शोषण, मातृभूमि, गोमांतक, आंदोलन, पुर्तगाली, जुलूस, यातनाएं।

शोध पत्र का अध्ययन क्षेत्र

"हमें भी याद रखें,
जब लिखे तारिख गुलशन का।
हमने भी लुटाया है,
चमन में आशियाना अपने जीवन का।"

स्वतंत्रता के धनी, स्वाधीनता आंदोलन के प्रति लगाव, जागरूकता और अंग्रेजी शासन को उखाड़ फेंकने कि तत्परता के कारण आप 1930 में युवावस्था में स्वतंत्र आंदोलन में कूद पड़े थे।^[1]

आपका जन्म 25 अगस्त 1916 को बारां जिले में, वैश्य परिवार में हुआ। आपके पिता का नाम श्री छोगामल एवं माता का नाम श्रीमती लक्ष्मीबाई है। आपकी शिक्षा बारां व कोटा जिले में हुई, तथा इसके उपरान्त आपने उच्च शिक्षा प्राप्त करने के लिए, गुरुदेव रवीन्द्र नाथ टैगोर के शांति निकेतन महाविद्यालय में अध्ययन कर कोलकाता विश्वविद्यालय से स्नातक (बीए ऑनर्स) की डिग्री प्राप्त की।^[2]

आपने भारत के स्वतंत्रता संग्राम के राष्ट्रीय आंदोलनों में भाग लिया तथा 1942 को भारत छोड़ो आंदोलन में अपनी अहम भूमिका निभाई।

आपने स्थानीय लोगों, किसानों, मजदूरों सभी को संगठित कर राष्ट्रीय स्वतंत्रता

आंदोलन से जोड़ने का प्रयास किया। आप कोटा राज्य प्रजामंडल की गतिविधियों में भी शामिल होकर कोटा शहर में जुलूस निकाला गया, जिसमें सैकड़ों छात्रों ने भाग लिया, इन छात्रों का नेतृत्व आपके द्वारा किया गया। आपके साथी श्री शंभू दयाल सक्सेना श्री बेनी माधव शर्मा वकील आदि ने आपका सहयोग किया। इस प्रकार स्वतंत्रता सेनानी के रूप में महत्वपूर्ण कार्य किया।^[3] इस समय देश में आजाद हिंद फौज और नेताजी सुभाष चंद्र बोस के कीर्तिमान कार्यों के प्रति एक जोश उमड़ रहा था, उसकी प्रतिक्रिया कोटा में भी हुई, जिसके कारण यहां के युवकों, विद्यार्थियों और नागरिकों ने स्वतंत्रता तथा सुभाष चंद्र बोस के व्यक्तित्व व बलिदान के लिए जुलूस निकालने तथा सभाएं आयोजित करने में योगदान दिया।^[4]

आपने सन् 1945 में झालावाड़ के बीड़ी मजदूरों को संगठित कर नेतृत्व किया। आपके साथी श्री छोटेलाल वर्मा ने सहयोग किया, बीड़ी मजदूरों के शोषण को समाप्त करने के लिए बीड़ी मजदूरों को संगठित कर हड़ताल की। जिससे तत्कालीन सरकार को मजबूर होकर, इन बीड़ी मजदूरों के वेतन तथा अन्य सुविधा देने के लिए सहकारी समिति का गठन किया गया। जिससे इनको शोषण से मुक्ति दिलाने में महत्वपूर्ण योगदान दिया।^[5]

आप प्रारंभ से ही कांग्रेस पार्टी और तत्कालीन सरकार के साथ रहे, आपके द्वारा छात्रों का नेतृत्व, तथा किसानों, गरीब मजदूरों के हितों में अनेक कार्य किया। किंतु आगे चलकर तत्कालीन सरकार ने आपके कार्यों को प्राथमिकता देना बंद कर दिया। जिसके कारण आपको तत्कालीन सरकार में विश्वास कम होने लगा।

जिसके परिणाम स्वरूप सन् 1946-47 में जब कोटा संभाग एवं राजस्थान में श्री जय प्रकाश द्वारा सोशल पार्टी की स्थापना हुई, तो कोटा क्षेत्र से समाजवादी पार्टी के मुख्य कार्यकर्ता के रूप में पदस्थापित किया गया आपके परम मित्र विमल कुमार कजोलिया व आपके सहयोगी साथियों के साथ मिलकर समाजवादी पार्टी को बढ़ाने में महत्वपूर्ण सहयोग दिया।

देश के सभी स्वतंत्रता सेनानियों के अथक प्रयासों से 15 अगस्त 1947 को हमारा देश आजाद हुआ। इसका जश्न-ए-आजादी कोटा शहर में बड़े धूमधाम से रामपुरा कोतवाली में बड़े धूमधाम से मनाया गया, आप और आपके साथियों द्वारा झंडा फहराया गया और राष्ट्रीयगान तथा राष्ट्रगीत गाया गया, और मिठाई का वितरण किया गया। आपके द्वारा आजादी का यह उत्सव लोगों को आज भी लोगों को याद है। इसके पश्चात आप कोटा की राजनीति में सक्रिय कार्यकर्ता के रूप में माने जाने लगे।^[6]

सन् 1953 में फर्रुखाबाद (उत्तर प्रदेश) में समाजवादी नेता डॉ राम मनोहर लोहिया और श्री छोटे लाल वर्मा, श्री प्रभु लाल विजय ने सिंचाई कि दर में अधिक वृद्धि के खिलाफ "नाहर रेट वृद्धि विरोधी आंदोलन" शुरू किया, जिसमें आप ने पूर्ण सहयोग करते हुए, हजारों किसानों को सम्मिलित कर इस आंदोलन को सफल बनाने में प्रमुख भूमिका निभाई थी। आप सभी लोगों को गिरफ्तार कर जेल में बंद कर दिया गया। आपके सहयोगी साथियों ने इलाहाबाद उच्च न्यायालय में याचिका प्रस्तुत की गई और इस याचिका में "नाहर रेट वृद्धि आदेश" को निरस्त कर दिया। जिसके परिणामस्वरूप तत्कालीन सरकार को अपना आदेश निरस्त करना पड़ा। और सभी समाजवादियों को जेल से रिहा किया गया। इस प्रकार आपके सहयोग से यह आंदोलन सफल हुआ।^[7]

1947 को भारत आजाद हो गया था, किंतु पुर्तगालियों के द्वारा गोवा राज्य को स्वतंत्रता प्राप्त नहीं हुई थी। अतः यहां के लोगों और डॉ राम मनोहर लोहिया के नेतृत्व में सत्याग्रह का प्रारंभ किया गया, आप भी समाजवादी पार्टी से संबंधित थे और राष्ट्रीय स्वतंत्रता की आपके अंदर ज्योति विद्यमान थी, इसी कारण आपने यहां के सभी समाजवादी दल के लोगों को गोवा सत्याग्रह में भाग लेने के लिए प्रेरित किया तथा 15 अगस्त 1955 को गोवा में होने वाले गोवा मुक्ति सत्याग्रह आंदोलन में भाग लेने के लिए हाडौती क्षेत्र (राजस्थान का दक्षिणी पूर्वी भाग) से गोवा मुक्ति सत्याग्रह के लिए एक समिति का निर्माण किया और इस समिति में आप के प्रयास से 41 व्यक्तियों का जत्था तैयार करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।^[8]

आपके सहयोगी स्वामी श्री माधव दास और अन्य व्यक्तियों के सहयोग से धन संग्रह कर सत्याग्रहियों की सूची तैयार की गई, इस कार्य में आपका सहयोग श्री दिलीप सिंह (तत्कालीन राजस्थान विधानसभा के सदस्य) ने महत्वपूर्ण योगदान दिया।^[9]

इस दल (जत्थे) में मुख्य व्यक्ति श्री स्वामी माधव दास, श्री प्रभु लाल विजय (आवा कनवास) श्री आनंद लक्ष्मण राव खांडेकर, श्री जगदीश चंद्र शर्मा, श्री जमील अहमद, कोटा तथा झालावाड़ से श्री छोटे लाल वर्मा, श्री रतनलाल हिंदुस्तानी, श्री प्रताप नारायण तिवारी बारां जिले से श्री मोहनलाल पटवा, श्री बाबूलाल अग्रवाल, श्री धन्नालाल पटवा, श्री ज्ञान चंद गुप्ता, श्री नंदकिशोर, रामगंज मंडी से श्री पन्नालाल यादव, श्री चौथमल यादव, श्री छीतर लाल, श्री रघुवीर दयाल यादव, मोडक स्टेशन से श्री भंवर लाल यादव, श्री राम कल्याण यादव आदि सत्याग्रही मिलाकर 41 व्यक्तियों का जत्था तैयार किया गया।^[10]

11 अगस्त 1955 को कोटा (हाडौती क्षेत्र का जिला) से गोवा मुक्ति सत्याग्रह के लिए रवाना हुये। 13 अगस्त की दोपहर को आप जत्थे के साथ बेलगांव पहुंचे, और यहां से आगे की रणनीति तैयार की, दो व्यक्तियों का स्वास्थ्य खराब होने के कारण, 14 अगस्त को गोवा की सीमाओं में 39 व्यक्तियों के साथ गोवा की सीमा में प्रवेश किया।

रात्रि 9:00 बजे आपका जत्था सामंतवाड़ी क्षेत्र में पहुंच गया और वहां से अरोंदा

के लिए रवाना हो गये, आप सभी मध्य रात्रि में भूखे प्यासे रहकर अनेक कठिन रास्तों जैसे कटीले व नुकीले पथरों, बरसात के गंदे पानी, नालों और नुकीले तारों वाले मार्गों से गिरते - उठते अंधरे में छुपते- छुपाते पुर्तगालियों की बस्तियों के अंदर प्रवेश किया। आपका जत्था पणजी के पास थिये गांव में पहुंचा। प्रातः 4:00 बजे थिये गांव के एक सार्वजनिक स्थान पर ढोल बजाकर गोवावासियों को जागृत करने के लिए संदेश दिया तथा सरकारी स्कूल की इमारत पर आपने राष्ट्रीय ध्वज लहराते हुए, संबोधन किया। तथा सबसे आगे श्री पन्ना लाल यादव नारे लगाते रहे। "नहीं नहीं कभी नहीं भारत गोवा अलग नहीं" इस प्रकार के बार-बार नारे लगा रहे थे। अचानक तभी पुर्तगाली सैनिक दस्ता जीप सहित वहां पर आकर इन सत्याग्रहियों पर बंदूक तान कर चेतावनी देने लगे हैं, कि नारे लगाना बंद करो तथा इस झंडे को तुरंत नीचे उतारने के लिए कहते हुये, पुर्तगाली सैनिकों ने गोलियां चला दी, जिसमें कुछ गोलियां हवा में चलाई, तथा उसके बाद सत्याग्रहियों पर गोली चलाई, जिसमें एक गोली स्वामी श्री माधव दास के हाथ की हथेली से रगड़ कर निकल गई, लेकिन एक गोली श्री पन्ना लाल यादव के सीने को चीर कर आर-पार निकल गई, किंतु श्री पन्ना लाल यादव व अन्य साथियों ने गोवा की स्वतंत्रता और तिरंगे झंडे के स्वाभिमान के नारे लगाते रहे, जब तक कि श्री पन्नालाल यादव अपने मातृभूमि की गोद में न समाये गये। इस प्रकार श्री पन्नालाल यादव अपनी मातृभूमि पर शहीद हो गए। उसी समय पुलिस की एक जीप में होलैंड का एक प्रतिनिधि पत्रकार वहां पर आ जाता है इस कारण सैनिकों ने गोलियां चलाना बंद कर दिया।^[11]

आप सभी सत्याग्रहियों को गिरफ्तार कर 38 घंटे तक पुर्तगाली पुलिस ने कठोर अत्याचार और यातना देकर प्रताड़ित कर करना प्रारंभ कर दिया। आप पर पुर्तगाली सैनिकों ने बंदूक के कुंदे से प्रहार कर आपको अनेक प्रकार की यातनाएं दी। तथा पुर्तगालियों ने जलती हुई सिगरेट के द्वारा आपके अंगों को जलाने का प्रयास किया। कुछ पुर्तगाली सैनिकों ने आप को लाठियों तथा हंटरो से खूब पिटाई कर आपको बेहोशी की हालत कर जेल में डाल दिया गया। आप सभी सत्याग्रह को अर्धमरी हालत में अरोंदा कैप भेज दिया गया। इस प्रकार गोवा सत्याग्रह में आप की महत्वपूर्ण भूमिका रही। और भारत के सभी सत्याग्रहियों के प्रयास के कारण 1961 को गोवा आजाद हुआ।^[12]

आप गोवा से लौटने के उपरांत पुनः राजनीति में सक्रिय हो गये, आपने समाजवादी लोगों के साथ मिलकर जनता कि समस्याओं और तत्कालीन सरकार के विरुद्ध गरीब, मजदूरों के शोषण के विरुद्ध आपने संघर्ष किया।^[13]

सन् 1972 में कोटा में हाडौती शोध प्रतिष्ठान कोटा के डायरेक्टर श्री शांतिलाल भारद्वाज से आपका साक्षात्कार हुआ, आप हाडौती के एक विद्वान संपूत हैं, जिन्होंने अपनी साहित्यिक गतिविधियों एवं स्वतंत्र चिंतन से राजस्थान के साहित्य जगत में अपना कार्य किया। आप राजस्थान विद्यापीठ उदयपुर में कार्यरत थे। आपने हाडौती के स्वतंत्र सेनानियों नामक एक पुस्तक लिख कर सभी स्वतंत्रता सेनानियों का सम्मान किया, जो प्रशंसनीय एवं ऐतिहासिक कदम था।^[14]

25 जून 1975 की मध्य रात्रि और 26 जून को प्रातः आंतरिक सुरक्षा के नाम पर तत्कालीन प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी ने देश में आपातकाल की घोषणा कर दी, और वे परिस्थितियां पैदा कर दी, जिसमें स्वतंत्र भारत कि आम जनता की जिंदगी कांटो पर पांव रखने जैसी हो गई थी। पुलिस ने दमनात्मक कार्य करना प्रारंभ कर दिया। परंतु आप और आपके कार्यकर्ताओं ने इस चुनौती का सामना करने का संकल्प किया और उन्होंने इस परिस्थितियों का जमकर विरोध किया।

परिणाम स्वरूप सायं काल 26 जून 1975 को पुलिस द्वारा श्री पुरुषोत्तम दास समाजवादी को गिरफ्तार कर लिया। संघर्ष समिति ने संघर्ष जारी रखा, "लोक संघर्ष समिति, दिल्ली" ने दिनांक 26 जून से 3 जुलाई तक जागरण सप्ताह मनाने की योजना बनाई, उसी निर्णय को क्रियान्वित करने के लिए आप तथा आपके सहयोगी साथी श्री काला बादल श्री भेरूलाल, श्री लक्ष्मण खांडेकर श्री डालचंद जैन, श्री प्रभुलाल विजय, श्री विमल कुमार कजोलिया आदि के नेतृत्व में कोटा

के टिपटा स्थान पर आम सभा को संबोधित किया।^[15]

आपने श्री पंडित दीनदयाल जी की प्रतिमा को माल्यार्पण किया और फिर सभा को संबोधित किया, जिसके परिणाम स्वरूप जनसमूह इकट्ठा हो गया, कुछ समय पश्चात पुलिस ने आकर आपको तथा आपके कुछ साथियों को पुलिस हिरासत में ले लिया। उसके उपरांत पुलिस की गाड़ी के आसपास भीड़ जमा हो गई और पुलिस थाने तक आपके साथियों में श्री विमल कजोलिया, श्री अब्दुल सलाम आदि रिहा करने के लिए नारे लगाते हुए चलते रहे। अंत में भीड़ और शांति व्यवस्था को देखते हुए, पुलिस प्रशासन ने आप सभी को रिहा कर दिया गया। इस प्रकार आपने निडर होकर तत्कालीन प्रशासन और तत्कालीन सरकार का विरोध कर जनता के हितों में कार्य किया।^[16]

आपको सन् 1993 में भारतीय स्वतंत्रता सेनानी के रूप से सम्मानित कर ताम्रपत्र प्रदान किया गया।, आपके कार्यों की काफी सराहना की गई। आपने इस उपलक्ष में श्री पन्ना लाल यादव के बारे में लिखा कि "जब-जब भी इस देश कि स्वतंत्रता के लिए त्याग और बलिदान की पुकार की गई है, मां हाडौती के पुत्रों ने यथाशक्ति से भाग लेकर माता के नाम को गौरवान्वित किया है, सन् 1857 से लेकर आज तक के स्वतंत्रता आंदोलनों में हमारे प्रयत्नों पर हम गर्व कर सकते हैं, महाराव पृथ्वी सिंह का अंग्रेजों के साथ मांगरोल के युद्ध, प्रताप की फांसी, स्वर्गीय केसरी सिंह बारहठ का त्याग, नैयनूराम का त्याग, बेगार आंदोलन तथा सन 1942 की जनक्रांति, राष्ट्रीय स्वतंत्रता संग्राम, गोवा मुक्ति आंदोलन में भी कोटा पीछे कैसे रह सकता है, गोवा में श्री पन्नालाल जी यादव ने अपने प्राणों का उत्सर्ग करके हाडौती मां के मुकुट पर चार चांद लगा दिए, हम इस वीर साहसी और निर्भीक शहीद को आदर पूर्वक प्रणाम करता हूँ" इस प्रकार आपने वीर शहीदों व स्वतंत्रता सेनानियों के बलिदान पर अनेक लेख प्रकाशित किए।^[17]

आपने समाचार पत्र-पत्रिकाओं में तत्कालीन सरकार के समय हो रहे भ्रष्टाचार को उजागर करने तथा किसानों व मजदूरों के शोषण के बारे में अनेक लेख लिखकर तत्कालीनलीन सरकार को चेतावनी देने का कार्य किया। सन 2010 के बाद आपका स्वास्थ्य खराब होने एवं वृद्ध होने के कारण आप का निधन हो गया, आपके पार्थ शरीर को राष्ट्रीय सम्मान के द्वारा अंतिम संस्कार किया गया।^[18]

समीक्षा

श्री हीरालाल जैन ने भारतीय स्वतंत्रता संग्राम, गोवा मुक्ति सत्याग्रह आंदोलन, मजदूरों के हितों के लिए संघर्ष एवं कृषक आंदोलन में भाग लेकर महत्वपूर्ण भूमिका निभाई, आपने साहित्य एवं पत्र-पत्रिकाओं के संपादन में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई, इसके अतिरिक्त गोवा सत्याग्रह 1955 कोटा मुक्ति दल के संस्करण 1988 में एक पुस्तक का प्रकाशन किया गया। कोटा के स्वतंत्रता सेनानियों के सम्मान के लिए आपने सरकार से सहयोग के लिए अनेक पत्र लिखे। आपके द्वारा आपका त्याग बलिदान एवं संघर्ष के लिए हाडौती व राजस्थान आपका कृतज्ञ रहेगा। जय हिंद जय राजस्थान।

संदर्भ सूची

1. विमल कुमार कंजोलिया, आजादी और उसके बाद, राजस्थान विद्यापीठ हाडौती शोध प्रतिष्ठान कोटा- 1993 पृ. सं. 177
2. 50 वीं स्वतंत्रता की स्वर्ण जयंती का स्मारिका, कोटा 15 अगस्त 1998, पृ. सं. 92
3. डॉ. शांति भारद्वाज "राकेश" हाडौती का स्वतंत्रता आंदोलन, राजस्थान विद्यापीठ हाडौती शोध प्रतिष्ठान कोटा 1964 पृ सं 146
4. विमल कुमार कंजोलिया, उपरोक्त पृ.सं 141-148
5. स्मारिका गोवा मुक्ति स्वतंत्रता सेनानी, स्व. श्री छोटे लाल वर्मा स्मृति 2009 पृ. सं. 17
6. विमल कुमार कंजोलिया, उपरोक्त पृ सं 147- 48
7. स्मारिका गोवा मुक्ति स्वतंत्रता, सेनानी स्वर्गीय छोटे लाल वर्मा उपरोक्त वही पृ.
8. हीरालाल जैन द्वारा स्मरण पत्र 2009
9. हीरालाल जैन, गोवा सत्याग्रह 1955 कोटा मुक्ति दल के संस्करण 1988 पृ सं. 12
10. छोटे लाल वर्मा स्मारिका उपरोक्त पृ. सं 11-12
11. हीरालाल जैन, गोवा मुक्ति दल कोटा डायरी के संस्करण 1988
12. छोटे लाल वर्मा स्मारिका, उपरोक्त, पृ सं. 12-13
13. विमल कुमार कंजोलिया, उपरोक्त, पृ.सं. 164
14. डॉ शांति भारद्वाज राकेश, उपरोक्त, पृ. सं. 146
15. विमल कुमार कंजोलिया उपरोक्त पृ सं 172
16. विमल कुमार कंजोलिया, उपरोक्त पृ सं 178
17. डॉ शांति भारद्वाज, उपरोक्त, पृ. सं. 146-45
18. साक्षात्कार विजय कुमार यादव, गुमानपुरा, बर्फ फैक्ट्री के पास कोटा।